اَلْحُبُّ لِلّٰہ اَلْبُغْضُ لِلّٰہ

- अल मअरूफ़ -

दोस्ती अल्लाह के लिये । दुश्मनी अल्लाह के लिये





- तस्नीफ़ ए लतीफ़ -

हुज़ूर फ़ैज ए मिल्लत मुफ़स्सिरे आज़म पाकिस्तान हज़रत अल्लामा अल हाफ़िज़

अबू सालेह मुफ़्ती मुहम्मद फ़ैज़ अहमद ओवैसी रज़वी

(نور اللہ مرقدہ)

- हिंदी अनुवाद -

फ़क़ीर-ए-हशमती मुहम्मद शाहरुख रज़ा हशमती क़ादरी

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم
الصَّلاۃُ وَالسَّلامُ عَلَیْك یَا رَسُوْلَ اللّٰہ

اَلْحُبُّ لِلّٰہِ
اَلْبُغْضُ لِلّٰہِ

अल मअरूफ़

दोस्ती अल्लाह के लिये
दुश्मनी अल्लाह के लिये

--- तस्नीफ ए लतीफ ---
हुज़ूर फ़ैज ए मिल्लत मुफ़स्सिर ए आज़म पाकिस्तान हज़रत अल्लामा अल हाफ़िज़
अबू सालेह मुफ़्ती मुहम्मद फ़ैज़ अहमद ओवैसी रज़वी
(نور اللہ مرقدہ)

--- हिंदी अनुवाद ---
फ़क़ीर-ए-हशमती मुहम्मद शाहरुख रज़ा हशमती क़ादरी

(+917693044656)

--- प्रूफ़ रीड़िगं ---
मुहम्मद तय्यब क़ादरी

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

لَا يَتَّخِذِ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ الۡكٰفِرِيۡنَ اَوۡلِيَآءَ مِنۡ دُوۡنِ الۡمُؤۡمِنِيۡنَۚ وَمَنۡ يَّفۡعَلۡ ذٰلِكَ فَلَيۡسَ مِنَ
اللّٰهِ فِىۡ شَىۡءٍ اِلَّاۤ اَنۡ تَتَّقُوۡا مِنۡهُمۡ تُقٰىةً ؕ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفۡسَهٗ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ الۡمَصِيۡرُ ﴿28﴾

(पारह - 2, सुरह आल ए इमरान, आयत - 28)

तर्जुमा - मुसलमान काफ़िरों को अपना दोस्त न बना लें मुसलमानों के सिवा और जो ऐसा करेगा उसे अल्लाह से कुछ इलाक़ा न रहा, मगर यह कि तुम उनसे कुछ डरो और अल्लाह तुम्हें अपने ग़ज़ब से डराता है और अल्लाह ही की तरफ़ फिरना है।

शान ए नुज़ूल : हज़रत उबादाह इब्ने सामीत रज़ि'अल्लाहु त'आला अन्हु ने जंग-ए-अहज़ाब के दिन हुज़ूर ﷺ से अर्ज़ किया के पांच सौ यहूदी मेरे हमदर्द और हलीफ़ है मैं चाहता हूँ के दुश्मन के मुकाबले में उन से मदद हासिल करूं उस पर ये आयत-ए-करीमा नाज़िल हुई और ख़ुदा व रसूल ﷻ व ﷺ के दुश्मनों को दोस्त व मददगार बनाने की मुमान'अत फ़रमाई गई और उन्हें राज़दार बनाना और उन से दोस्ती व मुहब्बत करना नाजाइज़ करार दिया गया। हां अगर जान व माल के नुक़सान का अंदेशा हो तो ऐसे वक़्त में सिर्फ ज़ाहिरी बर्ताव करना जाइज़ है।

(अस्बाबुल नुज़ूल लिलवाहीदी)

दूसरी जगह फरमाया :

يٓاَ يُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَتَّخِذُوۡۤا اٰبَآءَكُمۡ وَاِخۡوَانَكُمۡ اَوۡلِيَآءَ اِنِ اسۡتَحَبُّوا الۡكُفۡرَ عَلَى

الۡاِيۡمَانِ ؕ وَمَنۡ يَّتَوَلَّهُمۡ مِّنۡكُمۡ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوۡنَ ﴿23﴾

(पारह - 10, सुरह तौबा, आयत - 23)

तर्जुमा - ऐ ईमान वालों अपने बाप और अपने भाईयों को दोस्त न समझो अगर वह ईमान पर कुफ्र पसंद करें और तुम में जो कोई उनसे दोस्ती करेगा तो वही ज़ालिम हैं।

शान ए नुज़ूल : जब मुसलमानों को काफिरों से तर्क-ए-मुहब्बत का हुक्म दिया गया तो कुछ लोगों ने कहा के यह कैसे हो सकता है के आदमी अपने बाप, भाई, और रिश्तेदार वगैराह से त'आल्लुक खत्म कर दे तो इस पर ये आयत-ए-करीमा नाज़िल हुई और बताया के काफिरों से दोस्ती व मुहब्बत जाइज़ नहीं चाहे उन से कोई भी रिश्ता हो।
चुनांचे आगे इरशाद फरमाया :

قُلۡ اِنۡ كَانَ اٰبَآؤُكُمۡ وَاَبۡنَآؤُكُمۡ وَاِخۡوَانُكُمۡ وَاَزۡوَاجُكُمۡ وَعَشِيۡرَتُكُمۡ وَ اَمۡوَالُ ۨاقۡتَرَفۡتُمُوۡهَا

وَتِجَارَةٌ تَخۡشَوۡنَ كَسَادَهَا وَ مَسٰكِنُ تَرۡضَوۡنَهَاۤ اَحَبَّ اِلَيۡكُمۡ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوۡلِهٖ وَ جِهَادٍ فِىۡ

سَبِيۡلِهٖ فَتَرَ بَّصُوۡا حَتّٰى يَاۡتِىَ اللّٰهُ بِاَمۡرِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهۡدِى الۡقَوۡمَ الۡفٰسِقِيۡنَ ﴿24﴾

(पारह - 10, सुरह तौबा, आयत - 24)

तर्जुमा - तुम फ़रमाओ अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी औरतें और तुम्हारा कुंबा और तुम्हारी कमाई के माल और वह सौदा जिसके नुक़्सान का तुम्हें डर है और तुम्हारे पसंद के मकान यह चीज़ें अल्लाह और उसके रसूल और उसकी राह में लड़ने से ज़्यादा प्यारी हों तो रास्ता देखो यहाँ तक कि अल्लाह अपना हुक्म लाये और अल्लाह फ़ासिक़ों को राह नहीं देता।

इस आयत-ए-करीमा से साबित हुआ के अपने दीन व ईमान को बचाने के लिए दुनिया की मशक्कत बर्दाश्त करना मुसलमानों पर लाज़िम है और अल्लाह ﷻ और उसके रसूल प्यारे मुस्तफा ﷺ की इताअत के मुकाबले में दुनिया के त'आल्लुक़ात की परवाह करने वाला फ़ासिक़ है और ये भी साबित हुवा के ख़ुदा व रसूल (ﷻﷺ) की मुहब्बत ईमान की दलील है।

चुनांचे एक मक़ाम पर फरमाया :

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَه وَلَوْ كَانُوْٓا
اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ
بِرُوْحٍ مِّنْهُ ؕ وَيُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ
عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿22﴾

(पारह - 28, सुरह मुजादिलाह, आयत - 22)

तर्जुमा - तुम न पाओगे उन लोगों को जो यक़ीन रखते हैं अल्लाह और पिछले दिन पर कि दोस्ती करें उनसे जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल से मुख़ालफ़त की अगरचे वह उनके बाप या बेटे या भाई या कुंबे वाले

हों यह हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया और अपनी तरफ़ की रूह से उनकी मदद की और उन्हें बाग़ो में ले जायेगा जिनके नीचे नहरें बहें उनमें हमेशा रहें अल्लाह उनसे राज़ी और वह अल्लाह से राज़ी यह अल्लाह की जमाअत है सुनता है अल्लाह ही की जमाअत कामयाब है।

मालूम हुवा के मोमिन की ये शान ही नहीं और उस का ईमान ये गवारा ही नहीं कर सकता के ख़ुदा व रसूल (ﷻ وﷺ) के दुश्मनों, बद-दीनों, बदमज़हबों और ख़ुदा व रसूल (ﷻ وﷺ) की शान में गुस्ताख़ी और बे-अदबी करने वालों से मुहब्बत करे और ख्वाह वो दुश्मन ए रसूल उस मोमिन का बाप,दादा ही क्यों ना हो। और जिस में ये सिफ़त पाई जायेगी अल्लाह तआला ﷻ उसे सात (7) नेअमतों से नवाज़ेगा।

(1) अल्लाह तआला ﷻ ईमान को दिल में नक़्श कर देगा।

(2) इस में ईमान पर ख़ातिमा की बशारत है क्यों के अल्लाह तआला ﷻ का लिखा हुआ मिटता नहीं है।

(3) अल्लाह तआला ﷻ रूहुल कुद्स से मदद फरमाएगा।

(4) हमेशा के लिये ऐसी ज़न्नतों में ले जायेगा जिस के नीचे नहरें जारी है।

(5) अल्लाह ﷻ वाला हो जायेगा।

(6) मुँह मांगी मुरादें पायेगा।

(7) अल्लाह तआला ﷻ उस से राज़ी होगा और बंदे के लिये अल्लाह तआला ﷻ की रज़ा बस है।

चुनांचे ईमान की ये शान सहाबा-ए-किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन में मुलाहज़ा हो, हज़रत अबु उबैदा रज़ि'अल्लाहु त'आला अन्हु ने अपने बाप ज़र्राह को जंग-ए-उहद में क़त्ल कर दिया और हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़ रज़ि'अल्लाहु त'आला अन्हु ने बद्र के दिन अपने बेटे अब्दुल रहमान को मुक़ाबले के लिये बुलाया लेकिन हुज़ूर ﷺ ने उन्हें इजाज़त ना दी, हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि'अल्लाहु त'आला अन्हु ने अपने भाई अब्दुल्लाह बिन उमैर को क़त्ल किया, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि'अल्लाहु त'आला अन्हु ने अपने मामूँ आ'स बिन हिशाम बिन मुगीरा को जंग-ए-बद्र में क़त्ल किया और हज़रत अली इब्न ए अबी तालिब व हमज़ा व अबु उबैदा रज़ि'अल्लाहु त'आला अन्हु ने रबी'आ के लड़कों उतबा,शैबा और वलीद बिन उक़बा को जंग-ए-बद्र में क़त्ल कर दिया जो उन के रिश्तेदार थे।

अफ़सोस आज कल के मुसलमान कहलाने वाले अपने मुर्तद और बेदीन रिश्तेदारों और दोस्तों से कतअ ए तआल्लुक करने से भी मजबुरी ज़ाहिर करते हैं।

अल्लाह तआला ﷻ इरशाद फरमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَتَّخِذُوا الۡيَهُوۡدَ وَالنَّصٰرٰۤى اَوۡلِيَآءَ ‌ؔۘ بَعۡضُهُمۡ اَوۡلِيَآءُ بَعۡضٍ‌ؕ وَمَنۡ
يَّتَوَلَّهُمۡ مِّنۡكُمۡ فَاِنَّهٗ مِنۡهُمۡ‌ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهۡدِى الۡقَوۡمَ الظّٰلِمِيۡنَ ﴿51﴾

(पारह - 6, सुरह मायदाह, आयत-51)

तर्जुमा - ऐ ईमान वालो यहूद व नसारा को दोस्त न बनाओ वह आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं और तुम में जो कोई उनसे दोस्ती रखेगा तो वह उन्हीं में से है बेशक अल्लाह बे-इन्साफ़ों को राह नहीं देता।

शाने नुज़ूल : सहाबी-ए-रसूल ﷺ हज़रत उबादा बिन सामीत रज़ि'अल्लाहु त'आला अन्हु ने मुनाफ़िक़ों के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई से फरमाया के यहूदी मेरे बहुत दोस्त हैं जो बड़ी शान व शौक़त वाले हैं।

लेकिन अब में उन की दोस्ती से बेज़ार हूँ अल्लाह व रसूल (ﷻ و ﷺ) के सिवा मेरे दिल में किसी की मुहब्बत की गुंजाइश नहीं इस पर अब्दुल्लाह बिन उबई ने कहा के में यहूदी से दोस्ती ख़त्म नहीं कर सकता इस लिये मुझे पेश आने वाले हवादिस (हादसों) का अंदेशा हैं।

मुझे उन के साथ रस्म व राह (मेल जोल) रखनी ज़रूरी है ताकी वक़्त आने पर वो हमारी मदद करें तो हुज़ूर ﷺ ने अब्दुल्लाह बिन उबई से फरमाया के यहूदी दोस्ती का दम भरना तेरा ही काम है उबादा का ये काम नहीं।

इस पर अल्लाह तआला ﷻ ने इस आयत-ए-करीमा को नाज़िल फरमा कर बता दिया के यहूद व नसारा से मुहब्बत व दोस्ती कायम रखना मुसलमानों की शान नहीं।

(तफसीर ए सावी, जिल्द अव्वल, सफह 251)

अफसोस आज भी इसी अब्दुल्लाह बिन उबई की तरह उज़्र पेश करते हैं के अगर हम बेदीनों, बदमज़हबों और ख़ुदा ﷻ और रसूल ﷺ की शान में गुस्ताख़ी करने वालों से दोस्ती व मुहब्बत ना कायम रखें और उन से नफ़रत करें तो हमारे बहुत से काम रुक जाएंगे मगर ये उज़्र उन के नफ़्स का धोका है।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत फ़ारूक़-ए-आज़म रज़ि'अल्लाहु त'आला अन्हु ने हज़रत मूसा अश'अरी रज़ि'अल्लाहु त'आला अन्हु से फरमाया के तुम ने अपना मुंशी नसरानी रख लिया है हालांके तुम को उस से कोई वास्ता नहीं होना चाहिए क्या तुम ने ये आयत नहीं सुनी :

يَاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَتَّخِذُوا الۡيَهُوۡدَ وَالنَّصٰرٰۤى اَوۡلِيَآءَ

(पारह - 6, सुरह मायदा, आयत - 51)

तर्जुमा - ऐ ईमान वालो यहूद व नसारा को दोस्त न बनाओ

उन्होंने अर्ज़ किया नसरानी का दीन उस के साथ है मुझे तो उस के लिखने पढ़ने से गरज़ है।

अमीरुल मोमिनीन ने फरमाया के अल्लाह ﷻ ने उन्हें ज़लील किया तुम उन्हें इज्ज़त न दो अल्लाह ﷻ ने उन्हें दूर किया तुम उन्हें करीब ना करो हज़रत मूसा अश'अरी रज़ि'अल्लाहु त'आला अन्हु ने अर्ज़ किया के बगैर इसके बसरा की हुकूमत का काम चलाना दुशवार है में ने मजबूरन इस को रख लिया है क्योंके ईस क़ाबिलियत का आदमी मुसलमानों में नहीं मिलता।

इस पर अमीरुल मोमिनीन हज़रत फ़ारूक़-ए-आज़म रज़ि'अल्लाहु त'आला अन्हु ने फरमाया के अगर नसरानी मर जाए तो क्या करोगे जो इंतज़ाम उस वक़्त करोगे वो अब कर लो और इस दुश्मने इस्लाम से काम लेकर उस की इज्ज़त हरगिज़ ना बढ़ाओ।

(तफ़्सीरे खज़ाइनुल इरफ़ान)

कुफ़्फ़ार से दोस्ती व मुहब्बत चूंके मुर्तद और बेदीन होने का सबब है इस लिये इस कि मुमानअत के बाद फरमाया।

अब भी बाज़ लोग बदमज़हबों को अपने कारोबार में मुंशी मुखतार कार रख कर यही उज़्र करते हैं मैं वही अर्ज़ करता हूँ जो हज़रत फ़ारूक़-ए-आज़म रज़ि'अल्लाहु त'आला अन्हु ने फरमाया बल्कि वही अर्ज़ करता हूँ जो तमाम कायनात का ख़ालिक फरमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِه فَسَوْفَ يَاْتِى اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَه ۙ اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۫ يُجَاهِدُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿54﴾

(पारह - 6, सुरह मायदा, आयत - 54)

तर्जुमा - ऐ ईमान वालों तुम में जो कोई अपने दीन से फिरेगा तो अन्क़रीब अल्लाह ऐसे लोग लायेगा कि वह अल्लाह के प्यारे और अल्लाह उनका प्यारा मुसलमानों पर नर्म और काफ़िरों पर सख़्त अल्लाह की राह में लड़ेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत का अन्देशा न करेंगे यह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे और अल्लाह वुसअत वाला इल्म वाला है।

अल्लाह तआला ﷻ ने इस आयत-ए-करीमा में मुसलमानों में ब'आज लोगों के मुर्तद होने की खबर दी और साथ ही ये भी बता दिया के कुछ लोग ऐसे भी होंगे जो अल्लाह ﷻ के महबूब होंगे और अल्लाह ﷻ उन का महबूब होगा और उन की पहचान ये होगी के वो मुसलमानों के लिये नरम होंगे लेकिन काफिरों और मूर्तदों के लिये सख़्त रहेंगे।

वो अल्लाह ﷻ की राह में हथियार, कलम और ज़बान से लड़ेंगे मगर दुनियादार उन्हें फसादी और झगड़ालू समझेगा।

गालियां देगा और बुरा भला कहेगा लेकिन उन्हें इस का कोई गम ना होगा वो बिला ख़ौफ़ "لَوْمَةَ لآ ئِم اِعْلاءِ كَلِمَةِالْحَقّ" के फरमान की पासदारी करते ही रहेंगे।

नोट - मौजूदा ज़माना में अलामतों के मिस्दाक वही उलमा हैं जो बदमज़हबों का खुल्लम खुल्ला रद्द करते हैं और लोगों की मलामत और लअन-तअन को ख़ातिर में नहीं लाते और दौरे हाज़िराह में तमाम बदमज़ाहिब से देवबंदी, वहाबी मज़हब बहुत ज़्यादा ख़तरनाक है यही लोग हर तरह का भेस बदल कर अवाम को बहकाते हैं।

उन को अंदर से देखा जाये तो हुज़ूर ﷺ के बदत्तरीन दुश्मन हैं और उन की अदावत व दुश्मनी का बैन सबूत (वाज़ेह सबूत) उन की तहरीरें हैं और आप सामईन हज़रात उन तहरीरों को ख़ूब जानते हैं और अल्लाह तआला ﷻ ने अपने महबूब ﷺ के दुश्मन का हुक्म यूं नाज़िल फरमाया है :

وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِينٍۙ ﴿10﴾ هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ بِنَمِيمٍۙ ﴿11﴾ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيمٍۙ ﴿12﴾ عُتُلٍّۭ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيمٍۙ ﴿13﴾

(पारह - 29, सुरह कलम, आयत - 10,11,12,13)

तर्जुमा - और हर ऐसे की बात न सुनना जो बड़ा क़समें खाने वाला ज़लील। बहुत ताने देने वाला बहुत इधर की उधर लगाता फिरने वाला। भलाई से बड़ा रोकने वाला हद से बढ़ने वाला गुनाहगार। दुरुश्त-ख़ू उस सब पर तुर्राह यह कि उसकी असल में ख़ता।

शाने नुज़ूल : वलीद बिन मुगीरा ने हुज़ूर ﷺ की शान में गुस्ताख़ी की यानि मजनूं कहा (म'आज़अल्लाह) जिस से हुज़ूर ﷺ को दुख हुआ तो अल्लाह त'आला ﷻ ने चंद आयत-ए-मुबारक नाज़िल फारमा कर हुज़ूर ﷺ को तसल्ली व तशफ्फी (बहाली) दी और आयात ए मज़कूराह बाला में उस गुस्ताख़ (बद ज़बान और बेअदब) के नौ (9) ऐबों को बयान फ़रमाया हत्ता के ये भी ज़ाहिर कर दिया के उस की असल वलदुल हराम है।

जब ये आयतें नाज़िल हुईं तो वलीद बिन मुगीरा ने अपनी मां से जा कर कहा के मुहम्मद (ﷺ) ने मेरे में नौ (९) बातें बयान कीं हैं आठ को तो में जानता हूं लेकिन नवीं बात यानि मेरी असल में ख़ता होना तुझी को मअलूम होगा तू मुझे सच सच बता दे वरना में तेरी गर्दन मार दूंगा।

उस की मां ने जवाब दिया के हां तेरा बाप नामर्द था मुझे फिक्र हुई के वो मर जायेगा तो उस का माल दूसरे लोग ले जाएंगे तो मेंने एक चरवाहे को बुला लिया और तू उसी के नुत्फ़ा से है।

(तफसीर ए सावी, जिल्द 4, सफह 198, वाहिदी वग़ैरह)

इस तफ़्सीर से म'आलुम हुवा के हुज़ूर ﷺ की शान में गुस्ताख़ी करने वाले को बुरा भला कहना और उस के ऐबों को खुल्लम खुल्ला बयान करना सुन्नते इलाहिया (रब त'आला की सुन्नत) है और गुस्ताख़ व बेअदब कौन है क़ुर'आन से पूछिये :

يَحۡلِفُوۡنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوۡا ؕ وَلَقَدۡ قَالُوۡا كَلِمَةَ الۡكُفۡرِ وَكَفَرُوۡا بَعۡدَ اِسۡلَامِهِمۡ

(पारह - 10, सुरह तौबा, आयत - 74)

तर्जुमा - अल्लाह की क़सम खाते हैं कि उन्होंने न कहा और बेशक ज़रूर उन्होंने कुफ़्र की बात कही और इस्लाम में आ कर काफ़िर हो गए।

शाने नुज़ूल : इब्ने जरीर व तबरानी अबु शैख़ रईसुल मुफ़स्सिरिन हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि'अल्लाहु त'आला अन्हु से रिवायत करते हैं के हुज़ूर ﷺ एक दरख़्त के साया में आराम फरमा रहे थे तो इरशाद फ़रमाया अंकरीब एक ऐसा शख़्स आएगा जो तुम्हें शैतान की आँखों से देखेगा वो आये तो इस से बात हर्गिज़ ना करना थोड़ी देर बाद एक कंजी आंखों (रंगीन आंखों) वाला सामने से गुज़रा।

रसूलल्लाह ﷺ ने इसे बुला कर फ़रमाया के तू और तेरे साथी किस बात पर मेरी शान में गुस्ताख़ी (बेअदबी) का लफ्ज़ बोलते हो ? वो गया और अपने तमाम साथियों को बुला लाया सब ने आकर कसमें खायीं के हम ने कोई कलमा हुज़ूर ﷺ की शान में बेअदबी का नहीं कहा है।

इस पर अल्लाह तआला ﷻ ने ये आयत-ए-करीमा नाज़िल फ़रमाई के उन्होंने गुस्ताख़ी (बेअदबी) की है और बेशक वो ज़रूर कुफ़्र का लफ्ज़ बोलते हैं और रसूलल्लाह ﷺ की शान में बेअदबी कर के इस्लाम के बाद काफिर हो गए।

मालूम हुआ के हुज़ूर ﷺ की शान में गुस्ताख़ी और बेअदबी का लफ्ज़ बोलने वाला काफिर है और ऐसे शख्स को काफिर कहना सुन्नत ए इलाहिया (रब त'आला की सुन्नत) है।

चुनांचे दूसरे मक़ाम पर फ़रमाया :

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ ؕ قُلْ اَبِاللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ
تَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿65﴾ لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ؕ

(पारह - 10, सुरह तौबा, आयत - 65,66)

तर्जुमा - और ऐ महबूब अगर तुम उनसे पूछो तो कहेंगे कि हम तो यूंही हंसी खेल में थे, तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह और उसकी आयतों और उसके रसूल से हंसते हो। बहाने न बनाओ तुम काफ़िर हो चुके मुसलमान हो कर।

शाने नुज़ूल : इब्ने अबी शैबा व इबनुल मुंजिर व इब्ने अबी हातिम व शैख़ इमाम मुजाहिद शागिर्द-ए-ख़ास सैय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि'अल्लाहु त'आला अन्हु से रिवायत करते हैं के किसी शख़्स की ऊँटनी गुम हो गयी थी वो उस को तलाश कर रहा था तो रसूलल्लाह ﷺ ने फ़रमाया के ऊँटनी फलां जंगल में फलां जगह है इस पर मुनाफ़िक़ ने कहा के मुहम्मद (ﷺ) बताते हैं ऊँटनी फलां जंगल में है हालांके उन को ग़ैब की क्या ख़बर ? हुज़ूर ﷺ ने उस मुनाफ़िक़ को बुला कर दरयाफ़्त किया तो उस ने कहा हम तो ऐसे ही हंसी मज़ाक कर रहे थे तो अल्लाह तआला ने ये आयत-ए-करीमा नाज़िल फ़रमाई :

तर्जुमा - के अल्लाह ﷻ और रसूल ﷺ से ठठ्ठा करते हो बहाने ना बनाओ तुम मुसलमान कहला कर इस लफ्ज़ के बोलने से काफिर हो गये।

(तफ़्सीर इब्ने जरीर, मतबुआ मिस्र, जिल्द दहुम, सफह 105, तफ़्सीर दुर् ए मंसूर इमाम जलालुद्दीन सुयूती)

म'आलुम हुआ के रसूलअल्लाह ﷺ के बारे में यह लफ्ज़ बोलना के उन को ग़ैब की क्या ख़बर ? या लिखना जैसा के तक़वीयतुल ईमान के सफा 75 पर लिखा कि "रसूल को ग़ैब की क्या ख़बर" कुफ्र है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَ قُوْلُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿104﴾

(पारह - 1, सुरह बक़रह, आयत - 104)

तर्जुमा - ऐ ईमान वालों राइना न कहो और यूं अर्ज़ करो कि हुज़ूर हम पर नज़र रखें और पहले ही से बग़ौर सुनो और काफ़िरों के लिये दर्दनाक अज़ाब है।

शाने नुज़ूल : जब हुज़ूर ﷺ सहाबा-ए-किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन को कुछ व'आज़ व नसीहत फरमाते तो वो लोग दरमियान ए कलाम में कभी कभी अर्ज़ करते "رَاعِنَا يَارَسُوْلَ الله ﷺ" (यानि या रसूलल्लाह ﷺ हमारी रीआयत फरमाइए) यानि अपनी गुफ़्तगू को

दोबारा फरमा दीजिये ताके हम लोग अच्छी तरह समझ लें और यहूद की लुगत में लफ़्ज़ राईना बेअदबी के म'आना रखता था।

यहूदियों ने उस लफ़्ज़ को गुस्ताख़ी की नीयत से कहना शुरू कर दिया।

हज़रत सअद बिन म'आज रज़ि'अल्लाहु त'आला अन्हु यहूदियों की ज़ुबान जानते थे एक दिन ये कलमा आप ने उन की ज़ुबान से सुन कर फ़रमाया के ऐ दुश्मनाने ख़ुदा तुम पर अल्लाह ﷻ की ल'आनत हो अगर अब मैंने किसी की ज़ुबान से ये लफ़्ज़ सुना तो उन की गर्दन मार दूंगा।

यहूदियों ने कहा के आप तो हम पर नाराज़ होते हैं हालांके मुसलमान भी यही लफ़्ज़ बोलते हैं।

यहूदियों के इस जवाब पर आप रज़ि'अल्लाहु त'आला अन्हु रंजीदा हो कर हुज़ूर ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर ही हो रहे थे के आयत-ए-करिमा नाज़िल हुई जिस में رَاعِنَا कहने से लोगों को रोक दिया और इस माअना का दूसरा लफ़्ज़ اُنْظُرْنَا कहने का हुक्म हुवा।

(तफ़्सीर ए सावी, जिल्द 1, सफह 74)

साबित हुआ के अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम की ताज़ीम व तौकीर करना और उन की जनाब में अदब के कलमात बोलना फ़र्ज़ है और जिस लफ़्ज़ में बेअदबी का शाईबा हो वो हर्गिज़ ज़ुबान पर नहीं ला सकते और उस बात की तरफ इशारा है के अंबिया-ए-किराम

अलैहिमुस्सलाम की शान में गुस्ताख़ी और बेअदबी करने वाला काफिर है चाहे वो सुबह व शाम कलम-ए-तैयबा की रट ही क्यों ना लगाता हो।

अल्लाह तआला हम सब को नबी-ए-करीम ﷺ का अदब नसीब फरमाए। **(आमीन)**

وَ اٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

وَ صلَى اللّٰهُ تَعَالیٰ عَلى حَبِيْبِهِ الْكَرِيْمِ وَ عَلیٰ آلِه وَ اَصَحابِه اَجْمَعِيْنَ

अल फ़क़ीरुल क़ादरी मुहम्मद फ़ैज़ अहमद ओवैसी रज़वी غفرله

اَلْحُبُّ لِلّٰہِ اَلْبُغْضُ لِلّٰہِ

सरकारे आलाहज़रत रज़िअल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं

....

आज कल कुफ़्र व इरतदाद व ज़िन्दिक़ह व इल्हाद का गर्म बाज़ार है हर चहार तरफ़ से अल्लाह व रसूल व क़ुरआन पर गालियों तकज़ीबों की बोछ़ार है, कुफ़्र बकने वालों से गिला नहीं, अजब आम मुद्दइयाने इस्लाम से के उन के नज़दीक अल्लाह व रसूल व क़ुरआन से ज़्यादा हल्की इज़्ज़त किसी की नहीं, उन के माँ बाप को गाली देना तो बड़ी बात कोई उन्हें तू तो कह देखे और अल्लाह व रसूल व क़ुरआन पर गालियां सुनते हैं, छपे शाए होते देखते हैं और तेवरी पर बल नहीं आता बल्के गालियां देने वालों से मेल जोल याराने दोस्ताने बदस्तूर रहते हैं,
मैं जानता हूँ के हक़ कड़वा लगेगा मग़र कोई मुसलमान तो ऐसा निकलेगा के रब के हुज़ूर ग़र्दन झुका कर सच्चे दिल से देखे, हक़ व बातिल को मीज़ाने ईमान में परखे

[फ़तावा-ए-रज़विया शरीफ़ जिल्द-14, सफा- 160,162]

- प्रूफ़ रीड़िगं -

मुहम्मद तय्यब क़ादरी

- हिंदी अनुवाद -

फ़क़ीर-ए-हशमती मुहम्मद शाहरुख रज़ा हशमती क़ादरी